

ऋण योग्य कोष सिद्धांत या ब्याज का नवपरंपरावादी सिद्धांत
(Loanable Funds Theory or Neo- classical Theory of Interest)

प्रतिपादक- विक्सेल, ओहलीन, मिर्डल तथा रॉबर्टसन

पीटरसन के अनुसार, "ऋणयोग्य सिद्धांत के अनुसार ब्याज वह कीमत है जो ऋणयोग्य कोष की मांग तथा पूर्ति को संतुलित करती है।"

ऋणयोग्य कोष सिद्धांत के अनुसार,

ब्याज की दर **ऋणयोग्य कोष की मांग** और **आपूर्ति** पर निर्धारित होती है

यह सिद्धांत ब्याज की दर को निर्धारित करते समय मौद्रिक तत्व जैसे- *मुद्रा का संचय, मुद्रा का असंचय तथा बैंक साख* के साथ साथ वास्तविक तत्वों जैसे- *प्रतीक्षा, उत्पादकता, बचत* आदि को भी ध्यान में रखती है। अतः वे सिद्धांत ब्याज की दर के निर्धारण पर मौद्रिक तथा वास्तविक दोनों प्रकार के तत्वों को ध्यान में रखता है।

ऋणयोग्य कोष की मांग

ऋणयोग्य कोष की मांग मुख्य रूप से तीनों क्षेत्रों द्वारा की जाती है-

विनियोग (INVESTMENT)

व्यावसायिक फर्में विनियोग के लिए ऋणयोग्य कोष की मांग करती हैं।

इस सिद्धांत के अनुसार *विनियोग की मात्रा ब्याज की दर के साथ बदलती है* कम होने पर भी विनियोग के लिए ऋणयोग्य कोष की मांग अधिक होगी इसके विपरीत ब्याज की दर अधिक होने पर इसकी मांग कम हो जाएगी।

उपभोग (CONSUMPTION)

उपभोक्ताओं द्वारा ऋणयोग्य कोषों की मांग उपभोग की टिकाऊ वस्तुओं जैसे- कार, स्कूटर, टीवी आदि को खरीदने के लिए की जाती है। विशेष रूप से जब उपभोक्ता अपनी वर्तमान आय से अधिक मात्रा में व्यय करने का निश्चय करते हैं तो उनके द्वारा उधार देय कोष की मांग की जाने लगती है।

संचय (RESERVE)

ऋणयोग्य कोषों की मांग उन व्यक्तियों द्वारा भी की जाती है जो मुद्रा का नकद रूप से संचय करना चाहते हैं।

यदि ब्याज की दर कम होगी तो संचय के लिए मुद्रा की मांग अधिक होगी इसके विपरीत ब्याज की दर अधिक होने पर संचय के लिए मांग कम हो जाएगी

अतः

$$\text{ऋणयोग्य कोष की मांग} = \text{विनियोग} + \text{उपभोग} + \text{संचय}$$

मुद्रा की मांग तथा ब्याज की दर में विपरीत संबंध होता है।

ऋणयोग्य कोषों की पूर्ति

उधार देय कोषों की पूर्ति के स्रोत

बचते (SAVINGS)

- बचते उधार देय कोषों की पूर्ति का सबसे बड़ा महत्वपूर्ण स्रोत है।
- आय और उपभोग का अंतर बचत कहलाता है।
- ब्याज की दर तथा बचत की मात्रा में सीधा संबंध होता है।
- उंची ब्याज दर पर अधिक बचत और नई ब्याज दर पर कम बचत की जाती है।
- यही कारण है कि बचत का पूर्ति वक्र धनात्मक ढालवाला अर्थात् बाएँ से दाएँ ऊपर की ओर उठने वाला होता है।

बैंक साख (BANK CREDIT)

- ऋणयोग्य कोष की पूर्ति का एक दूसरा साधन बैंक साख द्वारा निर्मित साख है।
- ब्याज की एक न्यूनतम दर से बैंक साख ब्याज सापेक्ष होती है।
- इसका अभिप्राय हुआ कि ब्याज की उंची दर पर बैंक अधिक रुपया उधार देते हैं।

अप-संग्रह (Dishoarding)

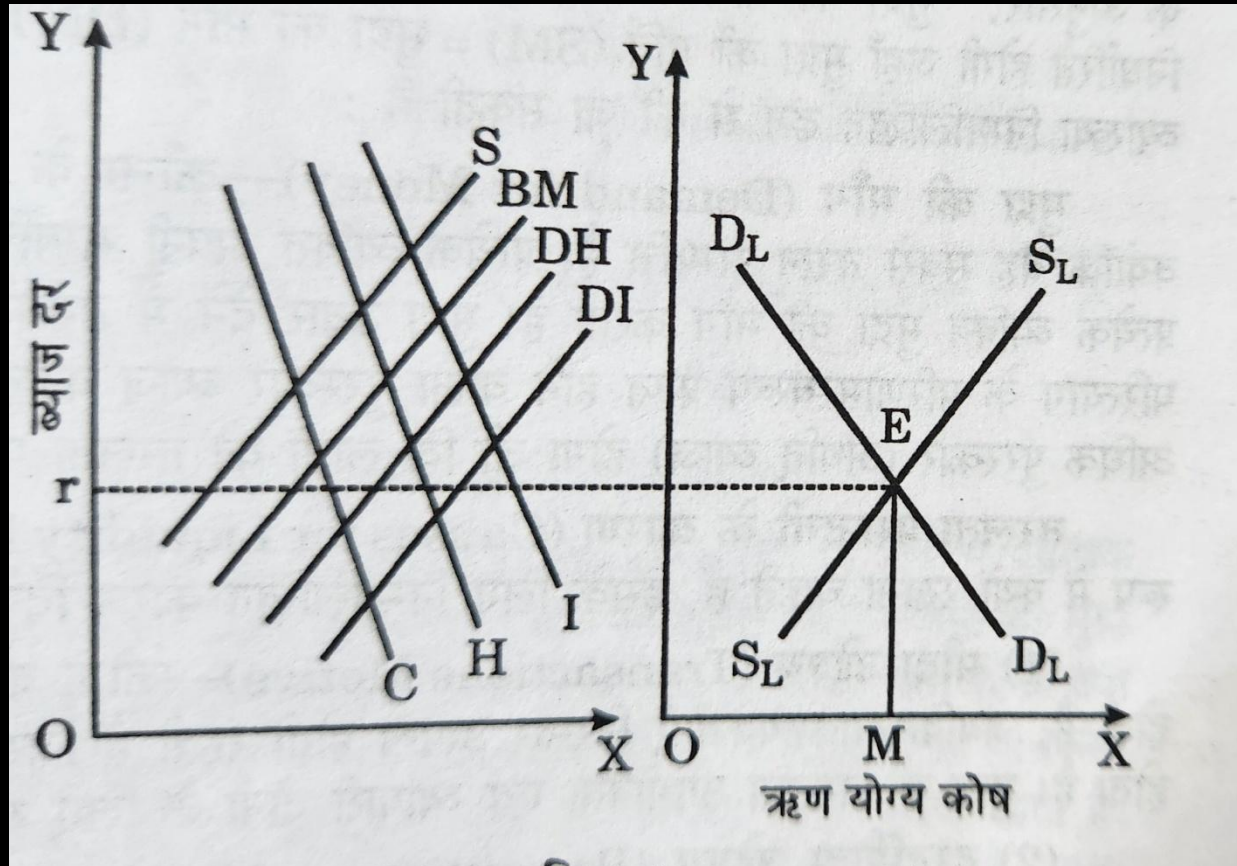
भूतकाल में संचित धन का जब लोग वर्तमान में अपसंचय अर्थात विनियोग करने लगते हैं तो इससे भी उधार देय कोषों की पूर्ति बढ़ जाती है।

अविनियोग (Disinvestment)

- ऋणयोग्य कोष का चौथा साधन अविनियोग है।
- अविनियोग से अभिप्राय यह है कि मशीनों के घिसने पर उसका प्रतिस्थापन नहीं किया जाए। इस प्रकार एक फर्म के द्वारा जो रकम प्रति वर्ष गिरावट को उसमें डालने के लिए सुरक्षित रखी जाती है, उसे ब्याज के रूप में दे दिया जाये।
- ब्याज की दर बढ़ने से अविनियोग बढ़ता है तथा ब्याज की दर कम होने से अविनियोग कम हो जाता है।

ब्याज की दर का निर्धारण

इस सिद्धांत के अनुसार ब्याज की दर पर निर्धारण उस बिंदु पर होता है जहाँ उधार देय कोष की मांग एवं उधार देय कोष की पूर्ति एक दूसरे के बराबर हो जाती है।



सिद्धांत की आलोचनाएँ:

वास्तविक तथा मौद्रिक तत्वों का मिश्रण

नव परंपरागत सिद्धांत में ब्याज की दर का निर्धारण **वास्तविक शक्तियों** जैसे- बचत, प्रतीक्षा, समय, प्राथमिकता इत्यादि तथा **मौद्रिक तत्व** जैसे- संचय, असंचय, बैंक मुद्रा इत्यादि द्वारा निर्धारित होते हैं। वास्तविक तथा मौद्रिक तत्व क्योंकि एक दूसरे सर्वदा भिन्न होती है इसलिए इनका मिश्रण वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ठीक नहीं है।

पूर्ण रोजगार की अवास्तविक मान्यता

परंपरागत सिद्धांत की यह नव परंपरागत सिद्धांत भी पूर्ण रोजगार की अवास्तविक मान्यता पर आधारित है।

वास्तविक संसार में कोई भी अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार की स्थिति को प्राप्त नहीं कर सकती है।

राष्ट्रीय आय की स्थिरता की अवास्तविक मान्यता

यह सिद्धांत ब्याज की दर और बचत के बीच सीधा संबंध मानता है।
उंची ब्याज दर पर लोग अधिक बचत करते हैं परंतु व्यापार में उल्टा होता जब ब्याज की दर उंची होती है तो-

कम विनियोग → कम रोजगार → कम आय → कम बचते हो पाती है

अनिर्धारणीय

यह सिद्धांत ब्याज की प्रतिष्ठित सिद्धांत की भांति ब्याज दर को अनिर्धारणीय बना देता है।

इसके कारण एक ही सिद्धांत के अनुसार ब्याज दर जानने के लिए हमें बचतों की मात्रा का ज्ञान होना चाहिए परंतु बचतों की मात्रा का ज्ञान होने के लिए ब्याज दर का पता होना जरूरी है इस प्रकार ब्याज दर का निर्धारण नहीं हो पाता।